卐 15-2-67

15-2-67 ओम शान्ती रात्री क्लास

जहाँ ल.न. का मन्दिर हो शिव बाबा का मन्दिर हो वहाँ समझाने का अच्छा है। मनुष्यों का दोष तो है नहीं है। ड्रामा के प्लान अनुसार भक्ति मार्ग चल रहा है। नई दुनियाँ कब स्थापन होती है यह किसी को कुछ भी पता नहीं। कोई का भी दोष नहीं। समझाया जाता है भक्ति मार्ग उतरती कला है। ज्ञान सुनाने वाला कोई है नहीं। तो उनका दोष थोड़ेई रहा। यह कहा जाता है ड्रामा। अकासुर बकासुर कंस जरासन्धी आद आदि तो है नाँ। वो ही अब निकलते हैं। गीता भागवत रामायण आद में सब इसी समय की बातें हैं। जबकि स्थापना फिर विनाश होता है। तुम्ही थे जिन्होंने कल्प पहले भी यह नालेज ली थी। कल्प-2 तुम्ही लेते हो। कोई तो ब्राह्मण भी बनते हैं फिर भी चलते-2 नालेज छोड़ देते हैं। पढ़ना छोड़ देते हैं। बच्चे जानते हैं हमको बाबा पढ़ाते हैं। परन्तु माया भुला देती है। भगवान बाबा पढ़ाते हैं वो ही टीचर है, गुरु है भूल जाते हैं। बाप ताकीद कराते हैं कि ऐसे बाप को भूलना तो नहीं चाहिये नाँ। परन्तु माया है प्रबल रेगुलर पढ़ते नहीं। बहाने कितने करते हैं। भगवान पढ़ाते हैं जानते हैं यह पद पाना है तो उसमें गफलत थोड़ेई करनी चाहिये। खास इस रूहानी पढ़ाई को पढ़ने में माया के बहुत विघ्न पड़ते हैं। क्यूँकि गृहस्थ व्यवहार में रहते हुये पढ़ना है। बाप तो पुरुषार्थ करवाते हैं परन्तु तकदीर में भी हो नाँ। अटेन्शन ही नहीं देते हैं तो बाप क्या करे? है तो पढ़ाई। और कोई बात ही नहीं है। कुमारियाँ अगर अच्छी रीती ज्ञान लेवें तो बहुत अच्छा उठा सकती हैं। बाबा देखें कि यह ज्ञान में बड़ी तीखी है तो झट उनको सेन्टर में दे देवें। स्प्रिचुअल नालेज कोई जानते नहीं है। भक्ति को फिलासफी कहते हैं। भक्ति के शास्त्र बहुत हैं। ज्ञान का शास्त्र होता नहीं। नालेज बाप मुख से देते हैं। आत्मा सुनती है। बाकी तो कोई में नालेज [illegible] होती नहीं। ज्ञान कोई में भी हो नहीं सकता। ज्ञान मिलता ही है संगम पर। इसमें बहुत विशाल बुद्धी चाहिये और फिर पक्का निश्चय बुद्धी हो। बच्ची पक्का योगी बन जावे और शादी करे तो कोई हाथ कब भी दुःख दे नहीं सकता है। योगबल में इतनी ताकत है। योगबल में पूरा रहे तो एम.सी. भी न आवे। क्यूँ कि अशरीरी होकर रहते हैं नाँ। बाप की याद करना बहुत भारी वर्क है। योग बिगर सब यह कर्मइन्द्रियाँ छोड़ेगी नहीं। योगबल होने से कोई भी तकलीफ हो नहीं सकती। विश्व का मालिक बनते हो। सभी कर्म इन्द्रियाँ वश में रखनी है। बाप श्रीमत देते हैं समझो और याद करो। बाकी ज्ञान है रचता और रचना को जानना। बाप कहते हैं मैं आया हूँ तुमको वापस ले जाने लिये। लड़ाई भी सामने खड़ी है। यादवों कौरवों का विनाश जरूर होना है। बाकी पाण्डव फिर पुनर्जन्म लेकर राज्य करेंगे। समय तो लगता है नाँ उथल पथल होने में। तुम इस पढ़ाई से राज्य पाते हो। यह राजयोग की पाठशाला है। वेद शास्त्र आद सुनाना वो सब है भक्ति की पाठशालायें। वो मनुष्य पढ़ाते हैं। यहाँ तो रूहानी बाप पढ़ाते है। ऐसी अवस्था हो जो पिछाड़ी में कोई आद भी नहीं आवे। अनासक्त होकर बच्चों आद की सम्भाल करनी है। कोई भी विघ्न पड़े तो हिलो नहीं। बाप कहते हैं यह सभी मरे पड़े हैं। इनसे क्या दिल लगानी है। यह तो रोगी पापी छी-2 है। अब घर से दिल लगाओ। वहाँ जाना है। वेद शास्त्र आद जो कुछ पढ़े हुये हो उनको भूलना है। सिर्फ बाप को और चक्र को याद करना है। वो कोई शास्त्र में है नहीं। ओम

16-2-67: प्रात क्लास का बाकी:-यहाँ यह है ज्ञान अमृत। तुम्हारा नशा उतरना नहीं चाहिये। सदैव चढ़ा रहना चाहिये। बाप जानते हैं भारत बिलकुल गरीब हो गया है। तो उनको भी प्रेरते हैं। तो वो भी समझते हैं भारत बहुत शाहुकार था। अब गरीब बन गया है। तो तरस पड़ता है। इसलिये जो माँगते हैं वो उधार देते रहते हैं। भारतवासी ही नहीं जानते कि हम स्वर्ग के मालिक थे, स्वर्ग कब था। कुछ भी नहीं जानते। क्यों कि कल्प की आयु लाखों वर्ष कह दी है। तुम इन ल.न. को देख कितने खुश होते हो। जानते हो हम श्रीमत से फिर ऐसे ट्रांसफर बन रहे हैं। बच्चों को शान्ती धाम और सुखधाम को याद करना है। दुःख धाम को भूल जाना है। यहाँ देखते हुये भी बुद्धि का योग बाप और वहाँ में लगा रहे। ओम